3 1761 06582903 8

मेंहदी रचे हाथ

(सचित्र)

SU
16898

Beautiful Palm Painting

उपयोगी साहित्य माला

SHASTRI INDO-CANADIAN INSTITUTE
156 GOLF LINKS,
NEW DELHI-110003. INDIA

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

आलेखिका :
एम० बी० "विनेश"
एम. ए.

मूल्य : दो रुपये

इस बार नये ढंग से मेंहदी लगाइये।

[मेंहदी घोलने, लगाने, (मांड़ने) रचाने व धोने की सम्पूर्ण विधि के साथ-साथ आकर्षक मेंहदी के सुन्दर डिजाइन शुभ पर्वों, तीज त्यौहारों पर मांड़ने हेतु प्रस्तुत किये जा रहे हैं।]

प्रमुख विक्रेता :
उषा बुक एजेन्सी,
चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

मुद्रक :
मूनलाइट प्रिन्टर्स
जयपुर–३

HISTORICAL IMPORTANCE OF MEHANDI

मेंहदी का ऐतिहासिक विवरण

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में नारी के मेंहदी रचे हाथ सौन्दर्य और सौभाग्य के प्रतीक माने जाते रहे हैं सौन्दर्य शास्त्र में महिलाओं के लिए लिखित शृंगार प्रसाधनों में मेंहदी का महत्वपूर्ण स्थान है मेंहदी रचाना नारी के सोलह शृंगारों में प्रमुख शृंगार माना जाता है गोरे गोरे कोमल-कोमल हाथों में रची मेंहदी देखकर भला किसका मन चंचल नहीं हो उठता किसका भावुक मन उन्माद, उल्लास और उमंग से सराबोर नहीं होता सच ही कहा गया है मेंहदी के नाम में ही महक है, मादकता है, मोहकता है. मधुरता है, मस्ती है और मतवालापन है।

मेंहदी का इतिहास :—

मेंहदी की उत्पत्ति और उसके इतिहास के विषय में प्रामाणिक तथ्य सुविधा से उपलब्ध नहीं है। कुछ लोग मेंहदी की उत्पति की कथा के साथ मिस्र का नाम जोड़ते हैं। कहा जाता है कि लगभग पांच हजार वर्ष पहले मिस्र की गर्म और शुष्क मिट्टी से मेंहदी की सोंधी गन्ध फूटी, मेंहदी का पौधा फला फूला और अपनी खुशबू बिखेरने लगा, किन्तु वास्तव में भारत की बांहों में ही मेंहदी को पनपने के लिए परिपूर्ण प्रश्रय मिला। और धीरे-धीरे मेंहदी भारत के सामाजिक धरातल पर लोकप्रिय होने लगी और हमारे राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन का तो अभिन्न अंग बन गयी।

मेंहदी छानने की विधि :—

बाजार से अच्छे हरे रंग की मेंहदी मंगवाइये, मेंहदी को नाइलोन या टेरेलीन के किसी साफ कपड़े से दो स्त्रियां मिलकर छानिये। एक स्त्री कपड़े को एक हाथ से पूरा समेट कर पकड़ ले और दूसरे हाथ से कपड़े में हाथ डाल कर मेंहदी को छाने। दूसरी स्त्री कपड़े को दोनों हाथों में बिना समेटे पकड़े रहे. एक समय के छानने से यदि मेंहदी बारीक न छन पाये तो उसे एक बार

फिर छानिये। जब मेंहदी बारीक छन जाय तो कपड़े में बचे हुए मेंहदी के बुरादे को अलग निकाल दीजिये. अब मेंहदी छनकर तैयार हो गयी।

मेंहदी का घोल बनाने की विधि :—

छनी हुई मेंहदी को कांसे की थाली में डालिये, थाली में डालने के बाद उसमें एक चुटकी चीनी या दो बूंद मिट्टी का तेल डालिये, (गोंद के पानी को घोलते समय डाल दे तो मेंहदी में तार भली प्रकार छूटते है) फिर अन्दाज से पानी डालकर थाली में रखी मेंहदी को हाथ की हथेली से खूब फेंटें अन्यथा मेंहदी में गांठें पड़ जायेंगी–जब मेंहदी एक रस होकर तार छोड़ने लगे व मुलायम हो जाय तब उसको काँसी के कटोरे में निकाल लीजिए आधा घण्टे मेंहदी को भीगने दीजिये। इसके बाद दियासलाई की तिल्ली से मेंहदी आलेख कीजिये।

मेंहदी कैसे लगाएँ :—

मेंहदी लगाने की कला जितनी सरल है उतनी ही कठिन भी। मेंहदी लगाने से पहले हथेलियों को खूब अच्छी तरह से साबुन से धो लेना चाहिये। फिर मोटे कपड़े से हथेलियों को पोंछकर उसमें तिल्ली का तेल या कैरोसिन का तेल हल्का सा लगा कर हथेलियों को मसल लेना चाहिये। इसके बाद हथेलियों पर मेंहदी लगाना प्रारम्भ करना चाहिये। तीली के माध्यम में लहरिया, चौपड, चूनरीं, घाट, गुणों का जोड, पीला घाट जो भी आप मांडना चाहें हथेली पर मांड लीजिये आपकी हथेली मंड कर तैयार हो गई।

हथेली के पीछे डोरा खींचिये :—

हथेली के पीछे डोरा खींचिये—सर्वप्रथम दो बारीक लाइन खींचिये बीच की लाइन कुछ अधिक चौडी होनी चाहिये, जिसमें चीरण भरिये। चीरण के बाहरवाली लाइन को छोडकर झोरे खींचिये और पत्तियों में भी भरत भर दीजिये। इस प्रकार हथेली के पीछे भिन्न भिन्न तरह के बैल बूंटे बनाकर हाथों की शोभा बढाईये व अंगुलियों में पीछे तरह तरह की फुलडियां मांडकर मेंहदी रचाइये।

नोट— अंगुलियों के पौरवों पर मोटी मेंहदी घोलकर लगाइये ।

पैरों पर मेंहदी :—

हथेली के साथ साथ पैरों में भी मेंहदी के सुन्दर नमूने चित्रित किये जाते हैं । पायल की सुन्दरता लिये हुए पैर मेंहदी के रंग में दुगने सुन्दर लगने लगते हैं इस लिये मेंहदी केछानस का बूर पैरों पर मेंहदी मांडने के काम लिया जा सकता है । पैरों पर मेंहदी लगाने से पहले पट्टे पर अपने पैर रखिए पैर जमीन से ऊंचे रहे ताकि पैरों की मेंहदी जमीन में न लगे । अब मेंहदी अंगुली से शुरू करके ऐडी के पीछे से लेकर मेंहदी का घोल चौड़ा चौडा लगाइए । जब सूख जाय तब उठकर चलना चाहिये ।

मेंहदी कैसे रचायें ?

मेंहदी का रंग अच्छा उमके इसके लिए मेंहदी के घील में नीबू का रस, पिसा हुआ कत्था, तिल्ली का तेल आदि में से कोई भी चीज घोल दे । इसमें मेंहदी अच्छी रचेगी दूसरे मेंहदी सूखने के बाद उस खटाई न चीनी का मिश्रित घोल रुई के टूकड़े से हथेली पर दस दस मिनिट बाग लगाये । जब मेंहदी घोल लग-लग कर सुखाव पर आने लगे तब उसे चालू से धीरे धीरे उतार कर मिट्टी का तेल या सरसों का तेल हथेलियों पर लगा कर छोड़ दे । रात भर हाथों पर पानी न लगने दे सुबह उठकर हाथ पैर धोकर तेल लगावे मेंहदी अच्छा रंग लेकर उभरेगी ।

मेंहदी लगाने से लाभ :—

मेंहदी नारी के सौभाग्य और सौन्दर्य को बढ़ाने वाला उपादान तो है ही साथ ही इससे और भी अनेक लाभ हैं जैसे किसी के दाद होने अथवा जलजाने पर मेंहदी लगाने से ठंडक पड़ जाती है क्योंकि मेंहदी में गर्मी शान्त करने की अपूर्व क्षमता निहित है शिर शूल साथ शोथ तथा हाथ पैर की जलन दूर करने के लिए इसकी पत्तियों का लेप किया जाता है । इसके कारण से रक्त बूंद, वेदना शांत तथा व्रण का शोधन होता है मुख तथा गले के रोगों मे इसके क्वाथ से कुल्ला किया जाता है । बालों को काला करने लिये नीलिमा

के साथ इसका लेप किया जाता है मस्तिष्क दोर्बल्य और अनिद्रा में इसके पत्र पुष्पों का फाण्ट अच्छा माना जाता है।

साराश :—

सारांश यह कथन है कि मेंहदी सौभाग्य और सौन्दर्य की सूचक होने के साथ-साथ यह शृंगार का भी उपादान है। यह नारी का आभूषण ही समझिये। जिस प्रकार मांगालिक पर्वों पर रंग विरंगे वस्त्र और आभूषण पहन कर स्त्रियां त्यौहार मनाती हैं। उसी प्रकार मेंहदी रूपी आभूषण से सुशोभना भी स्त्रियां अति आवश्यक समझती है। इसलिए मेंहदी नारी के लिए प्राचीन समय से ही महक, मादकता, मोहकता एवं शौक का प्रतीक मानी जाती रही है। यह शृंगार की श्रेणी में भी आती है, और प्रसाधान की श्रेणी में भी

क्योंकि सर्व सुलभ, सस्ता और शुभ पर्वों का सस्ता शृंगार होने के कारण यह महलों से लेकर गरीब की झोंपड़ी तक में अपना रंग बिना भेदभाव दिखाती है। इसके हरे पन में सुख शान्ति और प्रसन्नता निहित हैं और रंगने के बाद लालिया में स्नेह और प्रेम समाया हुआ है। यह कहना अनुचित न होगा कि मेंहदी एवं सुहागिन नारी का प्राचीन काल से चोली दामन का सा साथ रहा व रहेगा। मेंहदी परम्परागत संस्कृति के प्रति आकर्षण और गौरवता बनाये हुये है।

अपने हाथों की मेंहदी से अलंकृत करने की परम्परा बहुत प्राचीन है किन्तु जब से मैंने राजस्थानी लोक कला का अध्ययन करना प्रारम्भ किया है तभी से मेंहदी का कलापूर्ण सौन्दर्य मुझे प्रभावित करता आ रहा है। राजस्थान में केशरिया वस्त्र और मेंहदी दो ही शब्द ऐसे हैं जिसमें राजस्थानी संस्कृति परिलक्षित होती है। ये दोनों शब्द शौर्य और स्नेह के प्रतीक हैं आज मेंहदी भारतीय समाज में इतना घर कर गयी है कि शादी विवाह के अलावा तीज त्यौहार भी बिना मेंहदी के फीके लगते है।

निवेदिका

एम० बी० विनेश

एम. ए.

कैरी का बूँटा

बता। मुझे नखरंजनी, तू किस भाँति अरी ।
होकर भी भीतर अरुण, बाहर हरी हरी ॥

नये डिजाइन की बेल

छबि रंग सुरंग के बिन्दु बने लगें, इन्द्र बधू लघुताइन में।
चितजो चहें दो चकिसी रहें दो, के हिंदी मेंहदी इन पाइन में॥

चार पान की बूटी

गड़े बड़े छबि छाक छकि, छिगुनी छोर छूटे न ।
रहे सुरंग रंग रंगि उनहीं, नह-दी मेंहदी नेंन ।।

डबल करी की बूटी

कालिदास तैसी लाल मेंहदी के बुन्दन की,
चारु नख चन्दन की लाल अंगुरीन की।

कुंवर कन्हैया मुख चन्द की जुन्हैया चारु,
लोचन चकोरन की प्यास निरवारि दे।
मेरे कर मेंहदी लगी है नन्दलाल,
प्यारे लट उरझी है नेक बेसरि सुधारि दे।

चून्दड़ी की भांत

कज्जल चाह दिये अंगुरी लेहि, मैं मेंहदी रंग अंजन को ।
ऐसी जंची हिय में उपमा मनौं, गंज मृगावनि कंजन को ।।

फूलझड़ी का बूँटा

बरनत बड़ाई जहां नभ है, सु प्यारी रही,

मंजुल मजीठ ही की माठ-सी इरत बात।

सांकल का बूँटा

रोचन घोरी रचौं मेंहदी, [illegible]

[illegible] 'नृप संभु' कहैं मुक्ता सम पोति है।

सूरज का बूँटा

पायन तेरे मेंहदी लखि,
मोतिन के तरवानि तें लागति ।

राजस्थानी मोरड़ी

चमकता शहीदों का लहू परदे में कुवस के।
शफक का हुस्न क्या है शोखिए रंग हिना क्या है ।।

थाली के जाल का बूँटा

नायण हारी नणदल हारी, हारी मटकणी मामूजी ।
ना हारी दिवराणी जिठाणी, हारी मटकणी माकजी ।।

गोल घेवर

तुम्हारे हाथ में तशीवे हिना जब तक।
जहां में बाकी है दिल बारिय डर से सुखन ।।

साथिये का बूँटा

बहता रहा बदन में मेरे दम-बदम लहू ।
सीने पे था बदस्त हिनाई तमाम रात ।।

फूल चौक

सुखन होता है इंसां, ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना, पत्थर पे पिस जाने के बाद।

घाट

शहीदों के लहू की आबरू चमकी हिना बनकर।
ज़मीने-बागे जलियां इक दुल्हन मालूम होती है।।

राजस्थानी लहरिये का जाल

शुभ कामों में काम आती है यह, अमर सुहाग रचनी मेंहदी ।
शुभ पर्वों में याद आती है यह, अमर सुहाग रचनी मेंहदी ।।

पत्तियों का जाल

मेहदी में प्रीतम का प्यार निहारो।

मेहदी में प्रियतम की मधुर स्मृतियां निहारो।

गलीचे का जाल

मेंहदी सींची-मींची काचै दूध ।
प्रेम रस मेंहदी राचणी ।।

श्रावणी घेवर

नेकु उतै उठि बैठियै, कहा रहे गहि गेहु ।

छूटि जाति मेंहदी पनकु, नहहीं सूखन देहु ।

राजस्थानी चूँदड़ी

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के संग ।
बांटन वारे के लगे, ज्यों मेंहदी को रंग ।।

श्रावणी रात का फूल

मेंहदी के हैं हरे-हरे पात।
नारी के हैं गोरे-गोरे हाथ॥

चौपड़ का जाब

ज्यों मेंहदी के पान में, लाली लखी न जाय।
त्यों कन-कन में ईस बसें, दुनियां देखे नाय॥

मछली का जाल

चूमों कर कंज मंजु अमल अनूप तेरो,
रूप के निधान कान्ह यो तन निहारि दे।

शेखावाटी के बेलबूटे

गोरे-गोरे हाथों में मेहदी रंगा के, आंखों में कजरा डाल के।
चली दुल्हनियां पिया से मिलने, छोटा सा घूंघट निकाल के।

पानों की बेल

म्हारी लाडो नवा दिनां में नौसरण मेंहदी मांडेरे ।

इस मण मेंहदी ल्याय मेंनदपूं बैठी मांडेरे......

पत्तियों का जाल

हिना ए रंग मे जो नहाई हुई है।
किसी गुल से आज हाथापाई हुई है।

सावणियां री बेल

चुना-चुना कलियां सेज संवारू ऊपर गादी तकिया ।
बहुत दिना को पंथ निहारू तुम आया रंग रसिया ।।

फूलों का जाल

नायण आज न माड़ पग, काल सुणीजै जंग।
थारां लागै जो घणी तो दीजे कम रंग।।

भरवाँ गलीचे का जान

अंग हमारे हल्दी सुगन्धी सूधो सोनो म्हारो गात ।
पर डरती बोलू नहीं रे म्हारा मेंहदी में रच्या हाथ ।

केरी का बूंटा

रच दे मेंहदी साजणी नायण रण मुख नाह ।

जीता जंग बधावस्यां कटियां नग नग बाह ।।

मरवा वेलों के झोंरे

नायण मेंहदी दे गई काली बंधीज गांठ ।

साजन आयेंगे तखी खेलण जोगी बाट ।।

शेखावाटी के वेल बूटे

कटी कुचली गई पीसी छनी गूंथी गई मेंहदी।
जब इतने दुःख सहे तो इनके कदमों में लगी मेंहदी ।।

फूलों का जाल

मेहदी नाम से ही किसी उत्सव का आभास सा मिलता है।
बिना मेहदी के सब वार-त्यौहार फीके लगने लगते हैं।।

टहनियों का जाल

चलिये तो ये चलें हाथों पे फफोलों की तरह,
क्या हुआ आप जो मेंहदी लगाके बैठे हैं।

भरवाँ पत्तियों का जाल

एक बूंद मेंहदी की जिसमें प्यार का सागर लहराया।
एक बूंद मेंहदी की जिसमें सौन्दर्य का सागर लहराया।

चमेली के फूलों की बेल

कवि रंग सुरंग के बिंदु बने, लगे इन्द्र वधू लघुतायन में,
चित जो चहे दी चाकि सी रहेंदी केहि दी मेंहदी इन पायन में।

मोरठे का भरवां जाल

अक्ल आती है 'बशर' को ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद॥

फूल–पत्तियों का जाल

ज्यों मेंहदी के पान में, लाली लखी न जाय।
त्यों कन कन में हरि बसें, दुनियां देखे नाय॥

फुलड़ियों का जाल

इधर है पांव में मेंहदी, उधर है पांव में छाले ।

न हम से भागा जाता है न उनसे आया जाता है ।।

भरवां जाल

बर्के शोखी न गुजारद कि नशीनो यकजंग ।
तमाशाय चमन पाव हिना भी चाहे ।।

हथेलियों के पीछे बेल खींचें (मांडें)

गेवर बनणूं माली की बाग रंयी मैंदी,

जेठ पूणचो छोड़ो की बाग रंयो मैंदी ।

हथेलियों के पीछे बेल खींचें (मांडें)

मेंहदी की बिंदकी बिराजै तन बीच लाल,
सेनापति देखि पाई उपमा बिचारि है,
प्रातः ही आनन्द सों अरुन अरबिंद मध्य,
बैठि इंद्र गोपनि की मानो पतवारि है,

हथेलियों के पीछे बेल खींचें (मांडें)

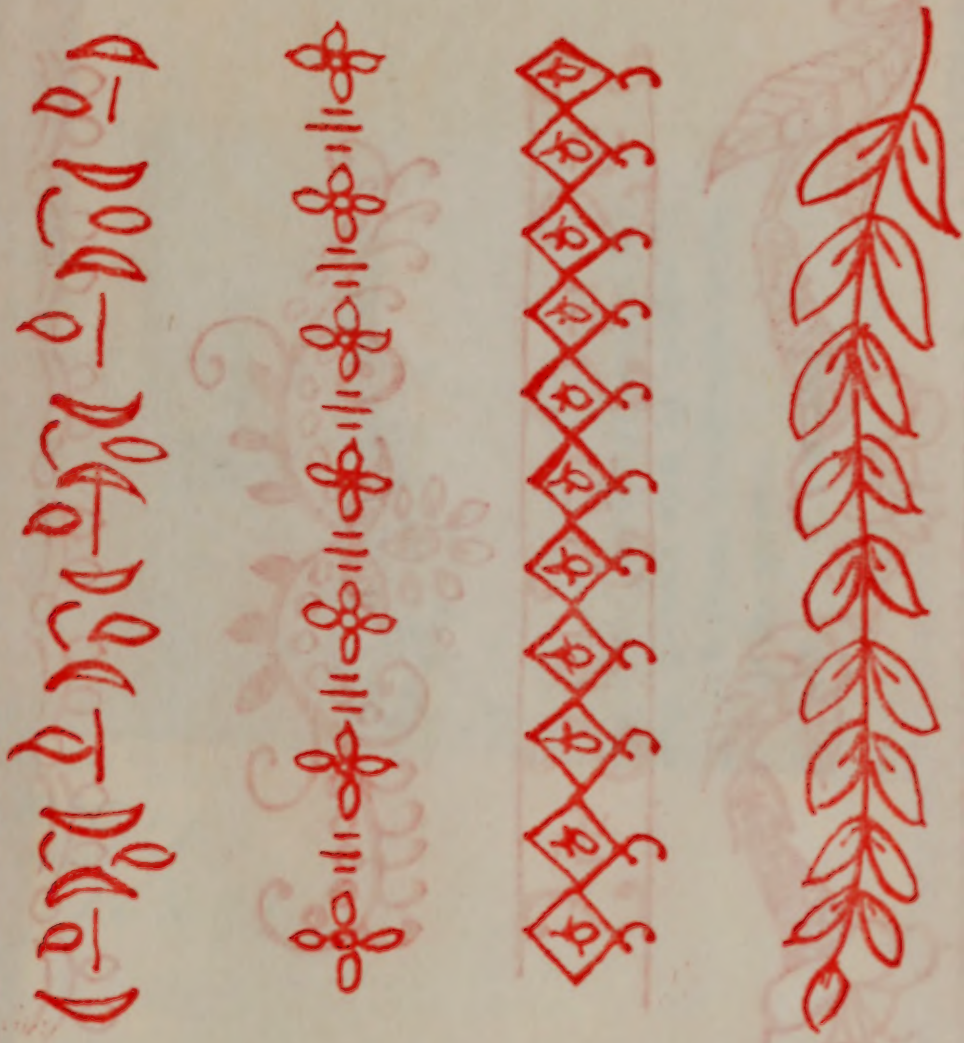

है मघवा पै मिठाई अवादन, मावै सवाद सुधा सनेकंद पै,
त्यों कवि 'ग्वाल' हंसीली के हाथन, बूंदै लगी मैंहदी की सुगंद में ।

हथेलियों के पीछे बेल खींचें (मांडें)

हिना कहिये या रक्त गंगा, नख रंजनी कहिये या मेहदी।
यह बहुमुखी उपयोगिता वाली, फलप्रद आपकी आय,
कम लागत और मेहनत में ही बढ़ा सकती है।

84891
NS

I-H
X7-913309 †
(77)-

utiful palm paintings / [आलेखिका
प्रमुख विक्रेता वाणी मन्दिर, [19

ing of the palms and soles of the
onia inermis) used by women in
ns; includes an introduction to the
of the practice.

MCH O I-H-14586

UTL AT DOWNSVIEW
D RANGE BAY SHLF POS ITEM C
39 09 01 05 10 003 2